पुराणमित्येव न साधू सर्वम्

(नूतन राष्ट्रीय शिक्ष प्रणाली २०२०)

प्रो. डॉ. सुरेखा राजेंद्र भारती
(M.A. Net Ph.D (Sanskrit)
जवाहर महाविद्यालय, अणदूर.

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्‌वितीय ज्ञान और पज्ञा का प्रतीक हैं जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग अद्‌भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यत्मिक और बौद्धीक मूल्यों पर केंद्रित होकन विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। ऋग्वदे, १०/७१/७)। छात्रों को मानव, प्राणियों एवं प्रकति के मध्य संतुलन को बनाए रखना सिखाया जाता था। शिक्षण और सीखने के लिए वेद और उपनिषद् के सिद्‌धांतो का अनुपालन जिससे व्यक्ति स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सके, इस प्रकार जीवन के सभी पक्ष इस प्रणाली में सम्मिलित थे।

शिक्षा प्रणाली ने सीखने और शारिरीक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया । कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए। इसके अतिरिक्त जो भी कर्म हैं वह सब निपुणता देने वाले मात्र हैं। (विष्णु पुराण, १/९/४१)। शिक्षा के इस संकल्प को भारती परंपरा में अंगीकृत कर तद्‌नुरूप ही विश्वविद्यालयों ओर गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी। उच्च ज्ञान के लिए छात्र विहार और विश्वविद्यालयों में जाते थे तथा शिक्षण अधिकतर मौखिक था, छात्रों को कक्षा में जो विषय पढाया जाता था उसको वो याद कर मनन करते थे।

प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। (ब्रह्माण्ड पुराण, १४/१५) । भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्‌ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां काई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे।

एतद् देशः प्रसूतस्य सकासादग्र जन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।

वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनिय प्रसिद्धी थी जिसमें मैत्रेयी, ऋतम्भरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि जैसे नाम प्रमुख थे। बोधायन, कात्यायन, आर्यभट्ट, चरक, कणाद, वाराहमिहिर, नागार्जुन, अगस्त्य, भर्तृहरि, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेकानेक महापुरुषों ने भारत भूमि पर जन्म लेकर अपनी मेधा से विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्‌धि हेतु अतुल्य योगदान दिया है।

गुरुकुल शिक्षा के प्रमुख आधार स्तम्भ थे । शिक्षार्थी अठारह विद्याओं- छः वेदांग, चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद), चरा उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्व वेद, शिल्पवेद), मीमांसा, न्याय, पुराण तथा धर्मशास्त्र का अर्जुन गुरु के निर्देशन में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अनुष्ठानपूर्वक अभ्यास कर सम्पादन करते थे जिससे आजीविका निर्वहन में कोई परेशान नहीं होती थी तथा प्रौढावस्था तक आते-आते अपने विषय के निपुण ज्ञाता बन जाते थे। त्याग, वृत्तिसम्पन्न तथा धन की तृष्णा से परे आचार्य ही भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षक माना गया है। शिक्षा को व्यवसाय और धर्नाजन का साधन नहीं माना जाता था। वायु पुराण (७७/१२८) में उल्लेख है कि गुरु रूपी तीर्थ से सिद्‌धि प्राप्त होती है तथा वह सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

आचार्यः कस्मात्? आचार ग्राहयति, आचिनोति अर्थान् आचिनोति बुद्धिमितो वा स आचार्य। जो स्वय सदाचारी हो और अपने शिष्यों को सदाचारी बनाए, पृथ्वी से लेकर परमाणु तक सभी विद्याओं को प्रदान करे छात्रों की बुद्धिको सुसंस्कारो से पवित्र करे उसे यास्काचार्यने निरुक्त मे आचार्य कहा है। प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था।

शैशव दशा में प्राय जिस समय व्याप्त थे,
निःशेष विषयों में तभी हाम प्रौढता को प्राप्त थे।
संसार को पहले हमीने ज्ञान भिक्षा दान की,
आचार की व्यापार को व्यवहार को विज्ञान की ।।

जब सारा विश्व अज्ञान रुपी अंधकार में भटकता था तब सम्पूर्ण भारत ते मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर संपूर्ण मानव बनाते थे।

न हि सत्यात्परोः धर्म । सत्य से बडा कोई धर्म नही है।

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता है। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। भारत द्वारा २०१५ में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा २०३० के लक्ष्य चार में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास योजना के अनुसार विश्व में २०३० तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शित्रा सुनिश्चित करने और अधिगम को बढावा देने के लिए पुनर्गठित करने की आवश्यकता होगी ताकि सतत् विकास के लिए २०३० एजेंदा के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त किया किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के अनुसार २०४० तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होगा जो कि किसी से पीछे नहीं है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था जहां किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। यह २१ वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है तथा भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, २१ वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

अनुसंधान एवं ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा । मानविकी और कला की मांग बढेगी क्योंकि भारत एक विकशित देश बनने के साथ-साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता की और अग्रसर है। प्राचीन वैद्यकशास्त्र, रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, योऽन्तरिक्षे रजसोविमानः (यजुर्वेद) ५०० प्रकार की विमान विद्या, अभियांत्रिकी शिक्षा, मातृभाषा में प्राप्त करने के लिए यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति अत्यंत प्रशंसनीय है। इस शिक्षानीति की मै मनसा भूरि भूरि प्रशंसा करती हूँ। इसी के साथ मानव को को सच्चे अर्थ मे मानव बनाने की विद्या इस शिक्षानीति से प्राप्त होगी। मनुष्य शब्द की व्याख्या करते हुए निरूक्त में कहा गया है:

मनुष्यः कस्मात्? मत्वा कर्माणी सीव्यतीति मनुष्यः।

जो विचार पूर्वक कर्म करता है उसे मनुष्य कहते है। इस नई शिक्षानीति मैं इस पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्राचीन शिक्षा परंपरा में सह शिक्षा का निषेध किया गया है। नई शिक्षानीति में इस और ध्यान देना आवश्यक है। यह

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

देश के लिए अत्यंत उपयोगी एवम चरित्र संपन्न देशके निर्माण में महत्वपूर्ण निर्णय होगा। वर्तमान में सीखने के परिणामों और जो आवश्यक है उनके मध्य की खाई को, प्रारंभिक बाल्यावस्था से देखभाल और उच्चतर शिक्षा के माध्यम से शिक्षा में उच्चतम गुणवत्ता, इक्विटी और सिस्टम में अखंडता लाने वाले प्रमुख सुधारों के जरिए पूर्ण किया जा सकता है। शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे बुनियादी बदला के केंद्र में निश्चित तौर पर शिक्षक होने चाहिए। यह नीति निश्चित तौर पर प्रत्येर स्तर पर शिक्षकों को समाज के सर्वाधिक सम्मानिय और श्रेष्ठ सदस्य के रुप में पुनः स्थान देने में सहायक होगी।

शिक्षा ही नागरिकों को हमारी अगली पीढी को सही मायने में आकार देती हैं। इस नीति द्वारा शिक्षकों को सक्षम बनाने के लिए हर संभव कदम उठाए जाने की योजना है जिससे कि वे अपने कार्य को प्रभावी रूप से कर सकें। हर स्तर पर शिक्षण के पेशे में सबसे होनहार लोगों को चयन करने की योजना है। जिसके लिए उनकी आजीविका, सम्मान, मान मर्यादा और स्वायत्तता सुनिश्चित हो सकेगी। साथ ही तंत्र में गुणवत्ता नियंत्रण और जवाबदेही के बुनियादी प्रक्रियाएं भी स्थापित होनी हैं। इस नीति का उद्देश ऐसे अच्छे इंसानों का विकास करना है जिनमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मकता, कल्पना शक्ति, नैतिक मूल्य का समावेश हो तथा संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी और बहुलवादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान कस सकें। इस शिक्षानीति में प्राचीन एवम् अर्वाचीन दोनों में से अनावश्यक भाग निकाल कर मानवी मूल्यों का समावेश करना आवश्यक है। ऐसा होने कपर मणिकांचन संयोग होगा।

भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए अभियांत्रिकी, चिकित्सा और व्यावसायिक पाठ्यक्रमो सहित लगभग सभी पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषा का विकल्प रखा गया है। शिक्षकों और अभिभावकों को हर बच्चे की विशिष्ट क्षमातओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु संवेदनशील बनाने की योजना इस शिक्षा नीति के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है। अकादमिक और अन्य क्षमताओं में सर्वांगीण विकास पर पूरा ध्यान दने का उल्लेख है। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है जिससे की सभी बच्चे कक्षा तीन तक साक्षरता ओर संख्या ज्ञान विषयों को सीखने के मूलभूत कौशल्यों को प्राप्त कर सकेंगे । रटकर परीक्षा पास करने वाली पद्धति को इस शिक्षा नीति में नकारा गया है और अवधारणात्मक समझ पर जोर देने वाली शिक्षा को विकसित करने की योजना बनाने का प्रयास किया गया है। जिससे तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मक और तार्किक सोच वाली शिक्षा विकसित कि जा सके।

विषादपि अमृतं ग्राह्यम् ।

विष में से भी अमृत ग्रहण करने की क्षमता इस नई राष्ट्रीय शिक्षानीति में विद्यमान है।

विद्ययाऽअमृतमश्नुते। विद्या से मानवजीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की भी आशा की जा सकती है। में इस शिक्षानीति का सवतोभावने समर्थन करती हूं।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad